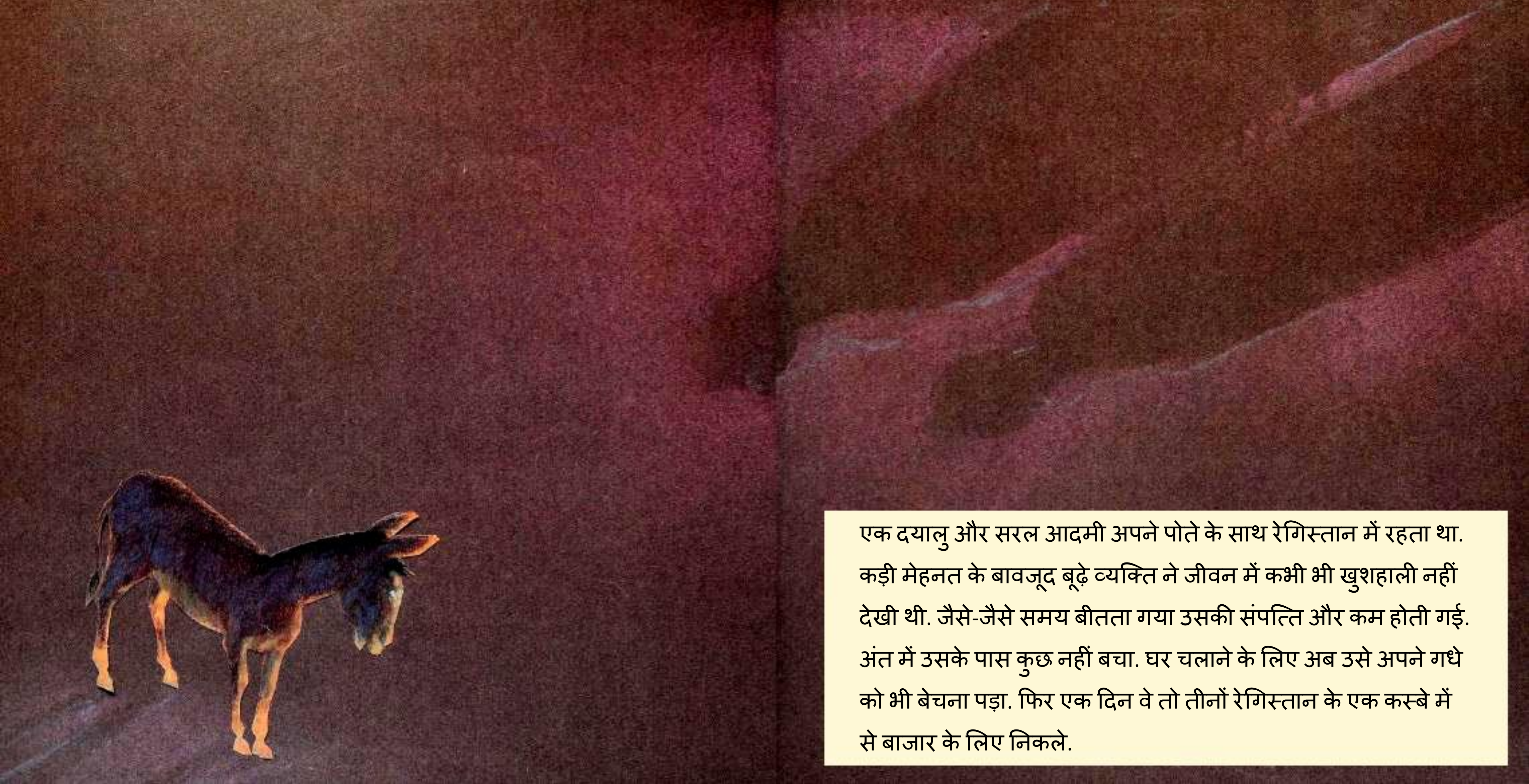
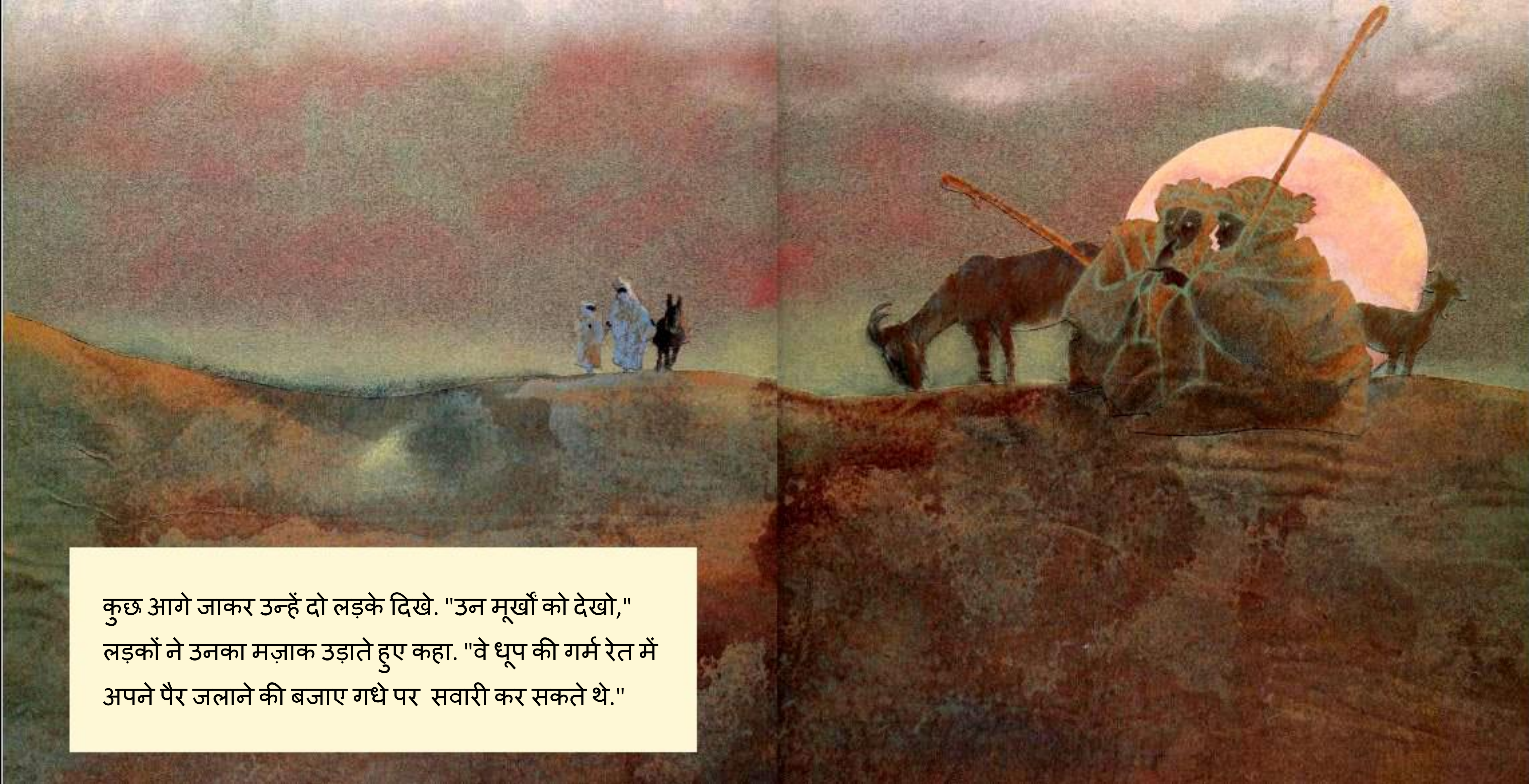


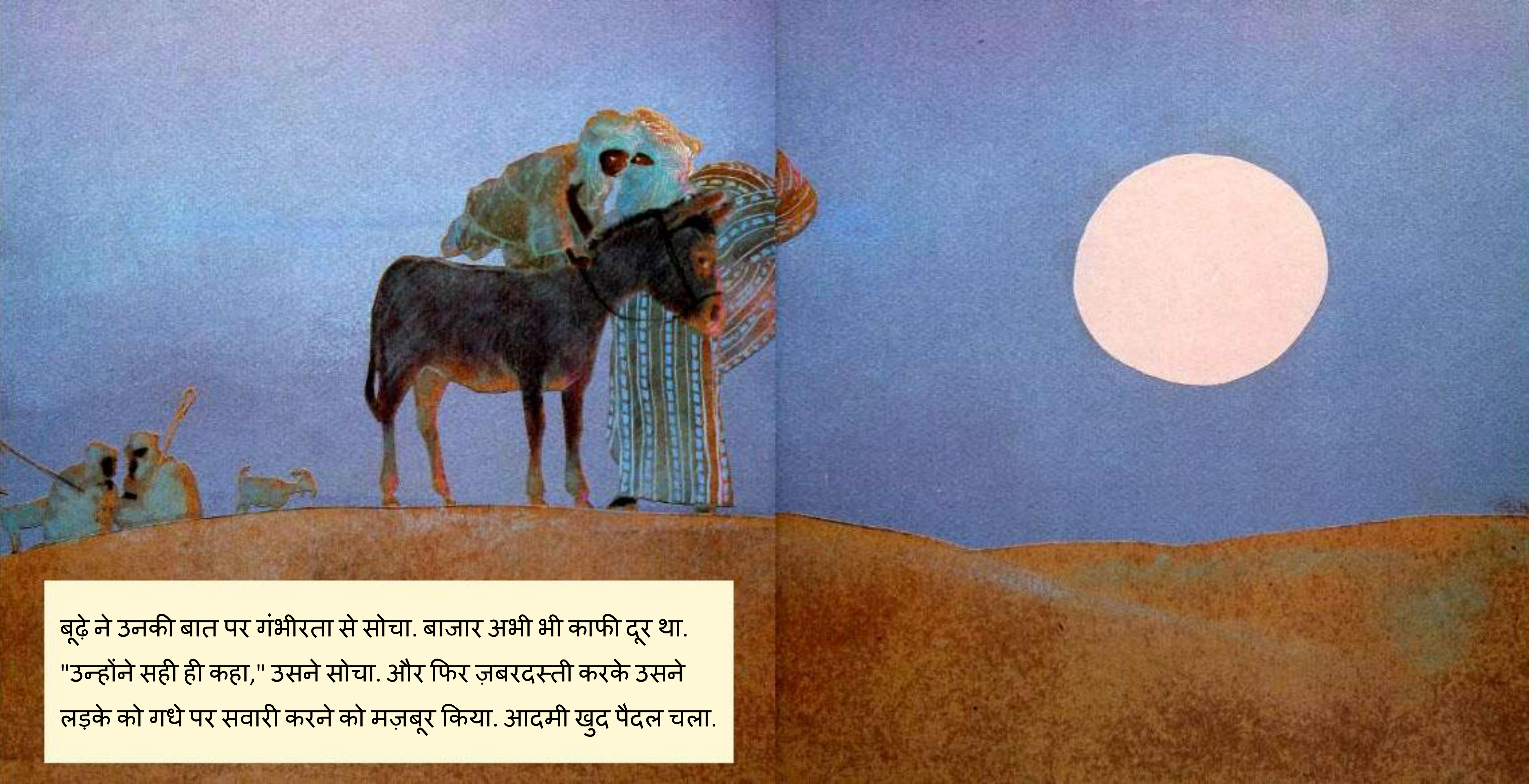
गधे की मुसीबत



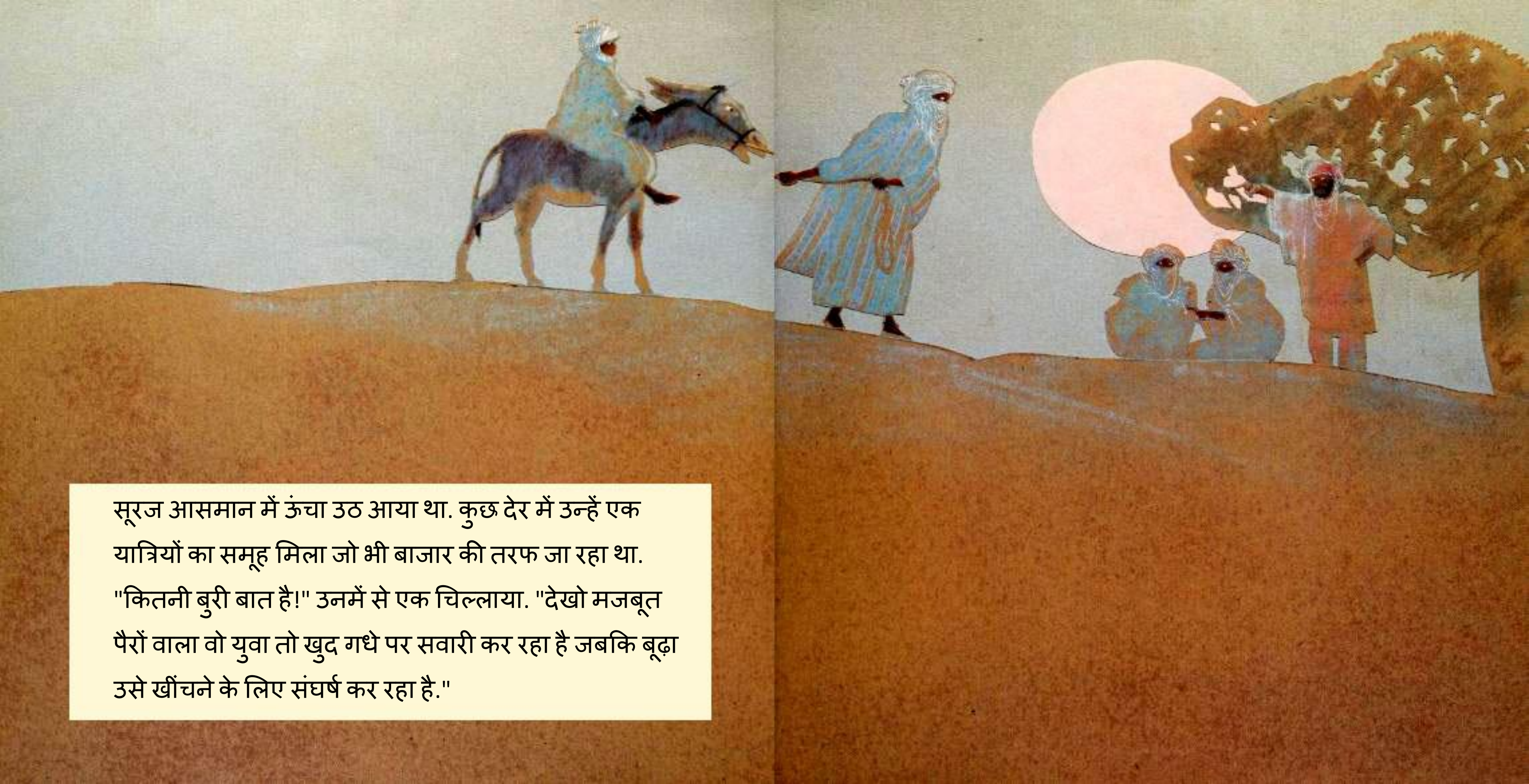
एक दयालु और सरल आदमी अपने पोते के साथ रेगिस्तान में रहता था. कड़ी मेहनत के बावजूद बूढ़े व्यक्ति ने जीवन में कभी भी खुशहाली नहीं देखी थी. जैसे-जैसे समय बीतता गया उसकी संपत्ति और कम होती गई. अंत में उसके पास कुछ नहीं बचा. घर चलाने के लिए अब उसे अपने गधे को भी बेचना पड़ा. फिर एक दिन वे तो तीनों रेगिस्तान के एक कस्बे में से बाजार के लिए निकले.



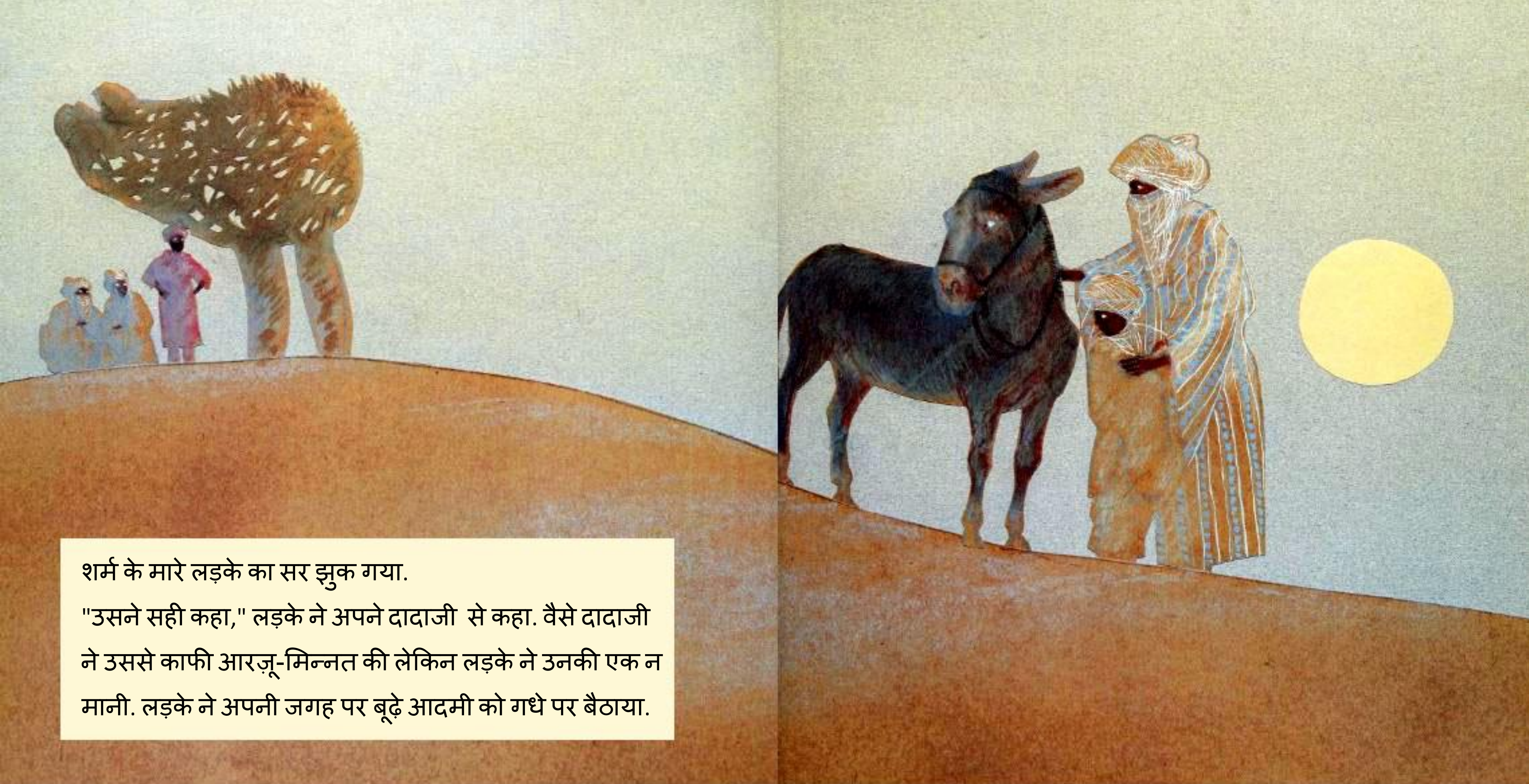
कुछ आगे जाकर उन्हें दो लड़के दिखे. "उन मूर्खों को देखो," लड़कों ने उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहा. "वे धूप की गर्म रेत में अपने पैर जलाने की बजाए गधे पर सवारी कर सकते थे."



बूढ़े ने उनकी बात पर गंभीरता से सोचा. बाजार अभी भी काफी दूर था. "उन्होंने सही ही कहा," उसने सोचा. और फिर ज़बरदस्ती करके उसने लड़के को गधे पर सवारी करने को मज़बूर किया. आदमी खुद पैदल चला.

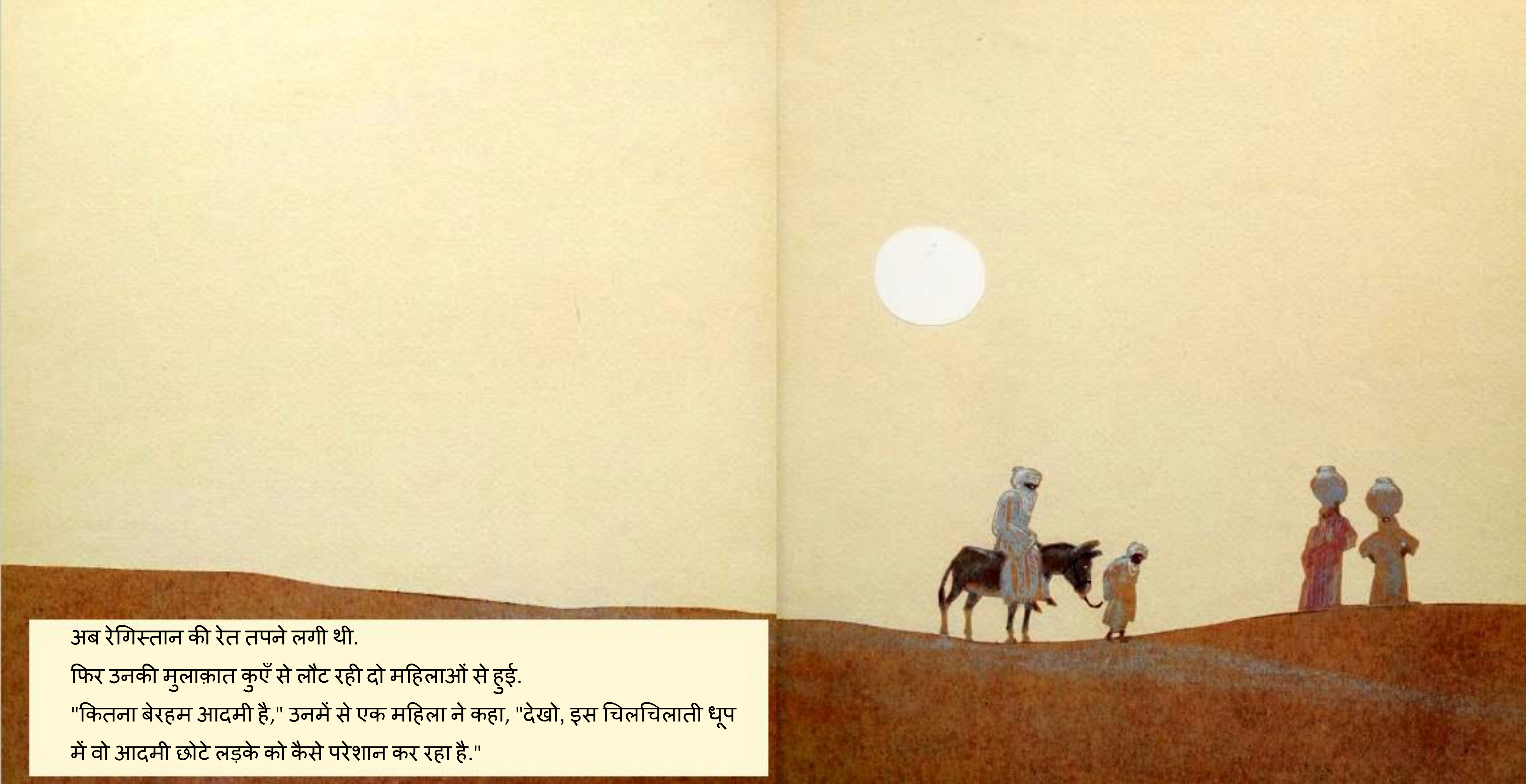


सूरज आसमान में ऊंचा उठ आया था. कुछ देर में उन्हें एक यात्रियों का समूह मिला जो भी बाजार की तरफ जा रहा था. "कितनी बुरी बात है!" उनमें से एक चिल्लाया. "देखो मजबूत पैरों वाला वो युवा तो खुद गधे पर सवारी कर रहा है जबकि बूढ़ा उसे खींचने के लिए संघर्ष कर रहा है."



शर्म के मारे लड़के का सर झुक गया.

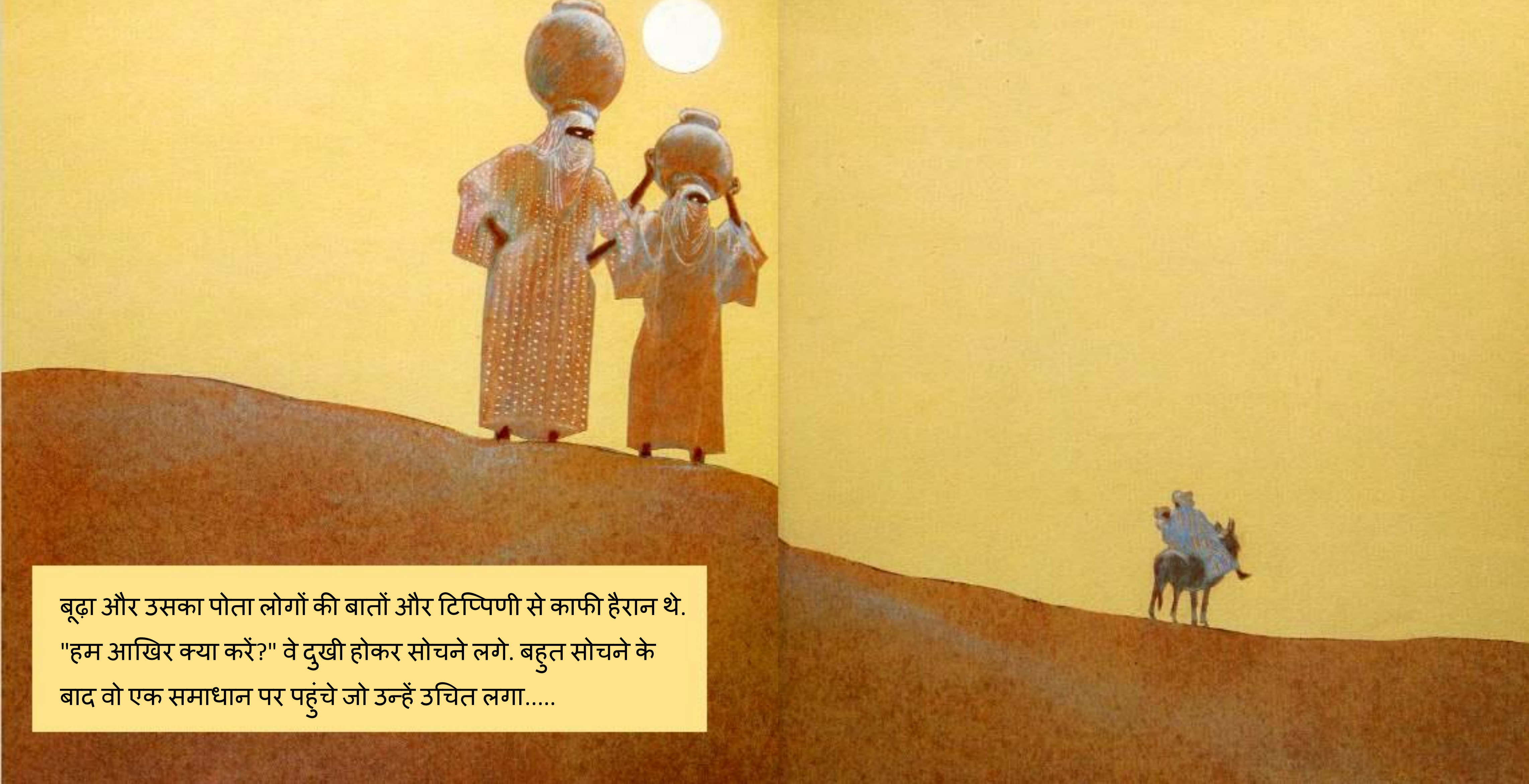
"उसने सही कहा," लड़के ने अपने दादाजी से कहा. वैसे दादाजी ने उससे काफी आरज़ू-मिन्नत की लेकिन लड़के ने उनकी एक न मानी. लड़के ने अपनी जगह पर बूढ़े आदमी को गधे पर बैठाया.



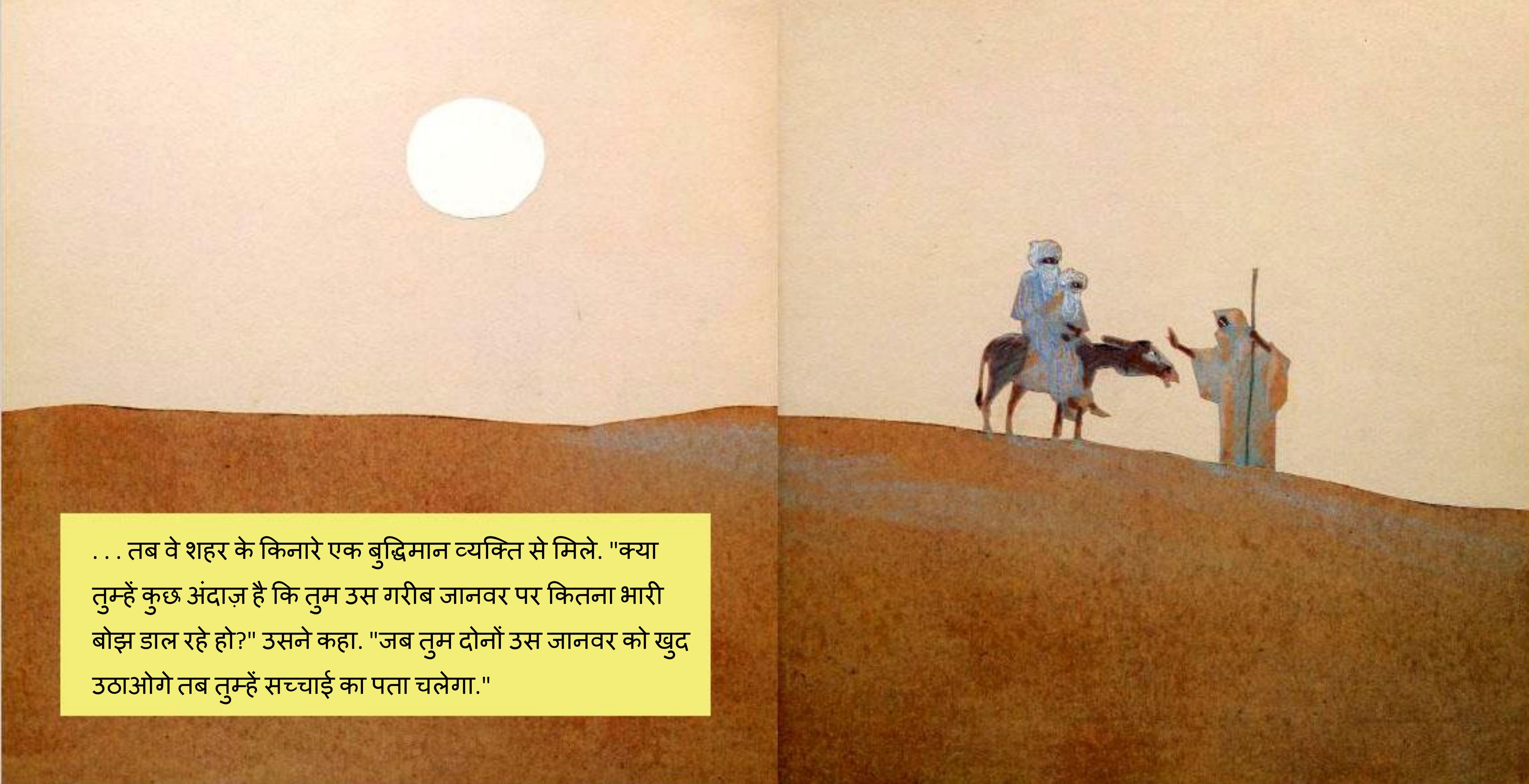
अब रेगिस्तान की रेत तपने लगी थी.

फिर उनकी मुलाक़ात कुएँ से लौट रही दो महिलाओं से हुई.

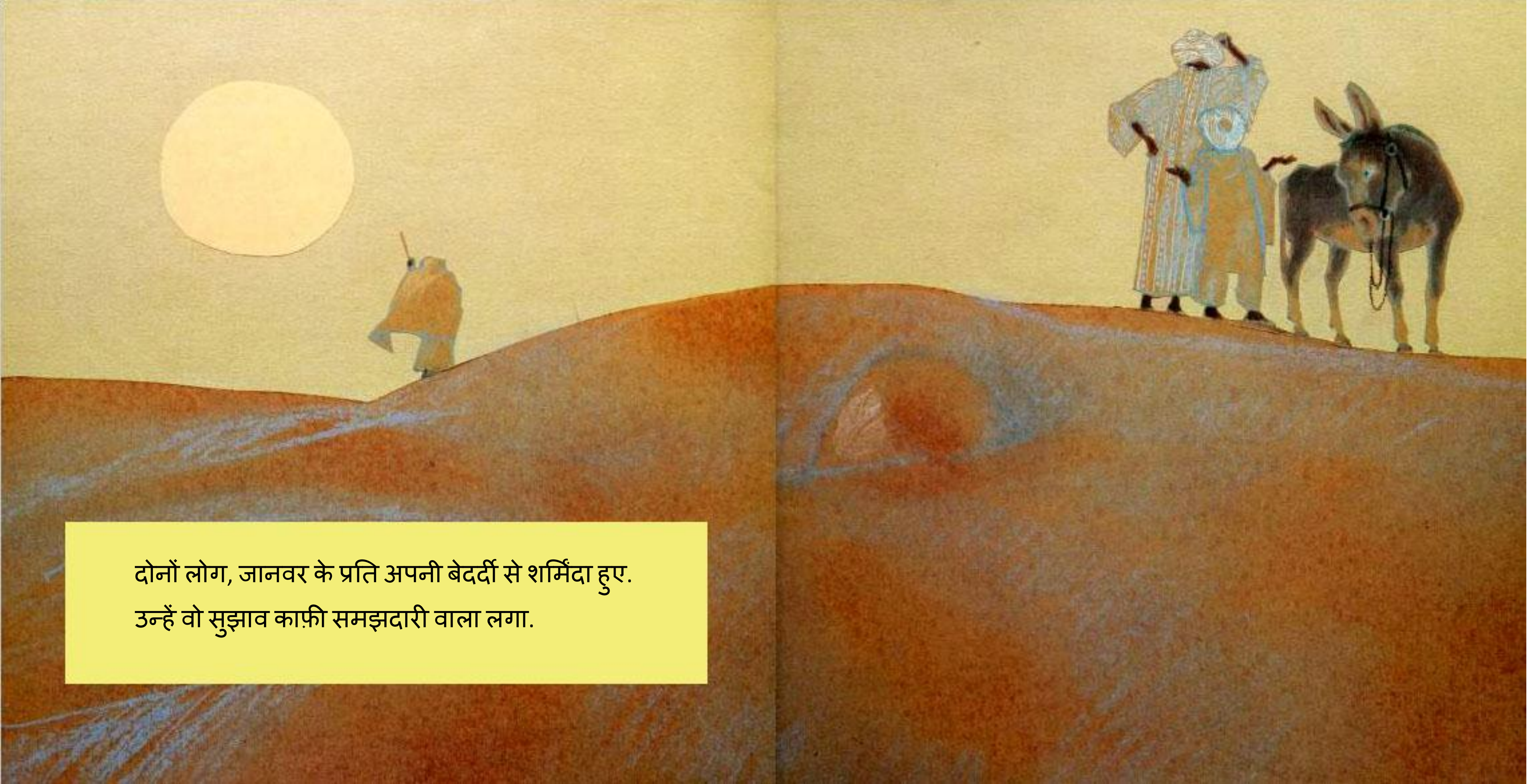
"कितना बेरहम आदमी है," उनमें से एक महिला ने कहा, "देखो, इस चिलचिलाती धूप में वो आदमी छोटे लड़के को कैसे परेशान कर रहा है."



बूढ़ा और उसका पोता लोगों की बातों और टिप्पिणी से काफी हैरान थे. "हम आखिर क्या करें?" वे दुखी होकर सोचने लगे. बहुत सोचने के बाद वो एक समाधान पर पहुंचे जो उन्हें उचित लगा.....

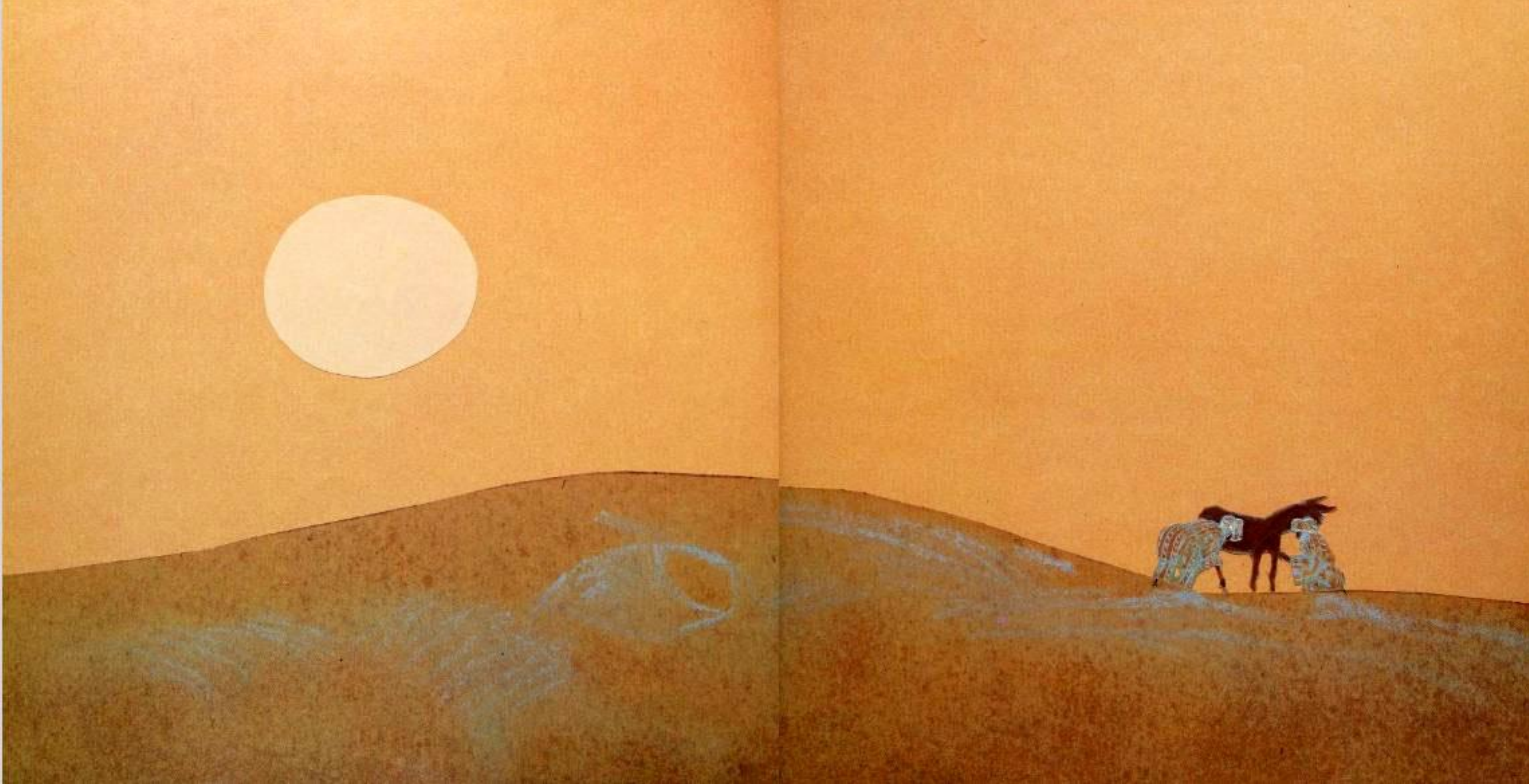


. . . तब वे शहर के किनारे एक बुद्धिमान व्यक्ति से मिले. "क्या तुम्हें कुछ अंदाज़ है कि तुम उस गरीब जानवर पर कितना भारी बोझ डाल रहे हो?" उसने कहा. "जब तुम दोनों उस जानवर को खुद उठाओगे तब तुम्हें सच्चाई का पता चलेगा."



दोनों लोग, जानवर के प्रति अपनी बेदर्दी से शर्मिंदा हुए.

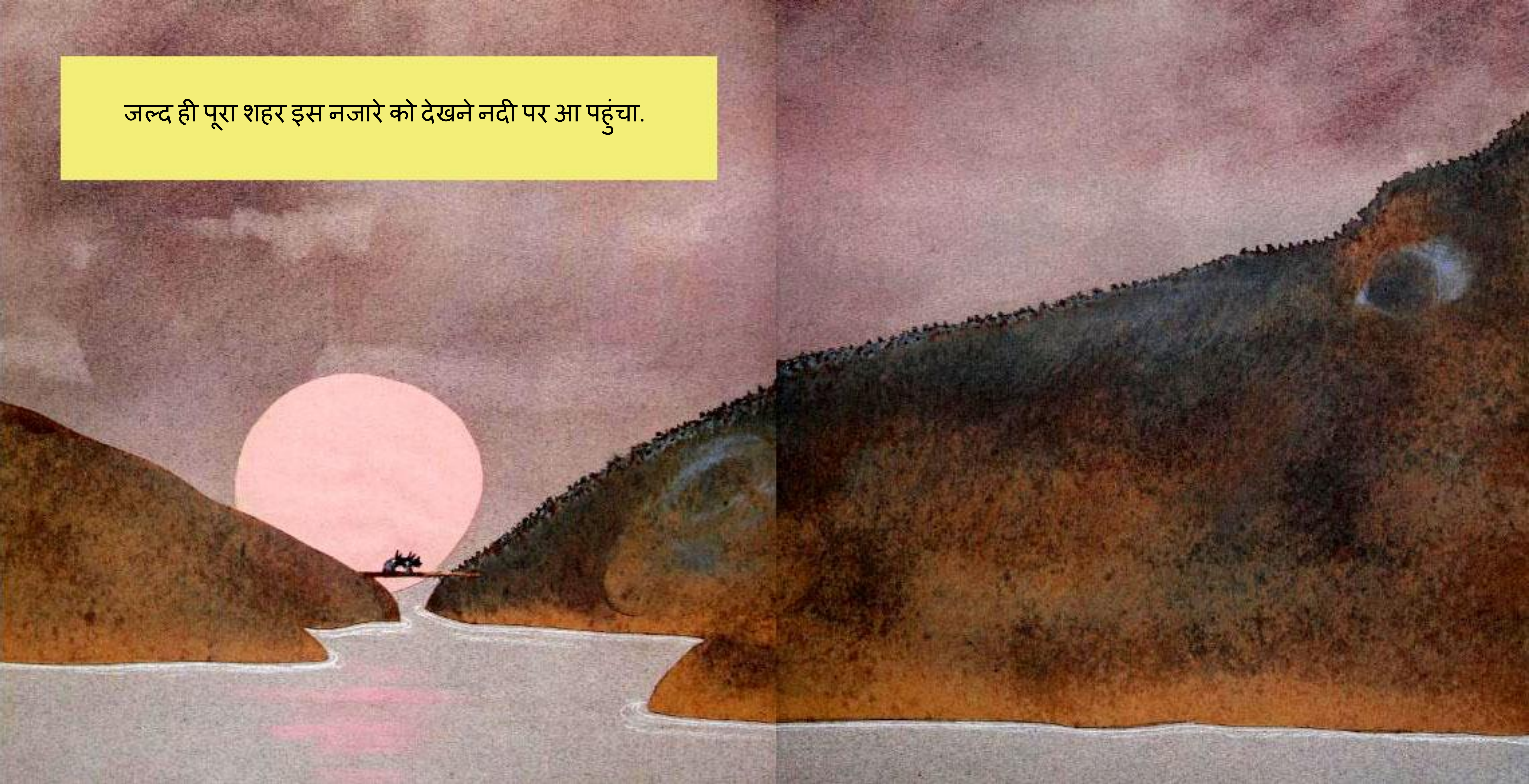
उन्हें वो सुझाव काफ़ी समझदारी वाला लगा.



यह बात जल्द ही चारों ओर फ़ैल गई कि एक सरल
और दयालु आदमी अपने पोते के साथ आ रहा है.



जल्द ही पूरा शहर इस नजारे को देखने नदी पर आ पहुंचा.



भीड़ उन्हें देख
खिलखिलाकर हँसी.
हँसी से चौंककर.....



..... गधे ने तंगडी
मारकर खुद को
आजाद किया . . .

. . और फिर वो नदी में कूद गया. गधा, बूढ़े आदमी और उसके पोते को छोड़कर भाग गया. उन दोनों के पास अब दूसरों के झूठे ज्ञान के अलावा और कुछ नहीं बचा. . .





. . . खुशहाली के लिए, लोगों को खुद अपने
दिल की आवाज़ को सुनना चाहिए.



समाप्त